संपादकीय

संपादक की कलम से...

सकारात्मक पत्रकारिता को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2014 में सातवां पहर अखबार की नींव रखी गई। समय के साथ आए उतार-चढाव के बाद भी लोगों ने अपना विष्वास हम पर बनाए रखा। निष्पक्ष एवं बेबाक खबरों के साथ पाठकों ने भी हमें सहर्ष स्वीकार किया। 2014 के दौर में हमने जिन उद्देष्यों के साथ इस सफर की शुरूवात की, उद्देष्य आज भी वही है जमीनी हकीकत को पन्नो पर उकेरना, अव्यवस्था के खिलाफ तब तक आवाज उठाना जब तक वे दुरूस्त न हो जाए। 7 वें वर्ष के प्रवेषांक में पाठकों के बीच एक बार फिर सातवां पहर अखबार नए अंदाज में नए कलेवर के साथ प्रकाषित होने जा रहा है। अखबार के माध्यम से हमारा प्रयास आपके साथ भावनात्मक रूप से जुड़ने का होगा। हमारी पहली प्राथमिकता यही होगी कि हर वर्ग इसका अवलोकन करे व हमारी कमियों को हमारे समक्ष रखे ताकि हम इसे और भी बेहतर बना सके।

-विनिष तम्बोली (विक्की)
संपादक
सातवां पहर

सड़कों पर जाम...लोग हलाकान...

भागमभाग की इस दुनिया में एक बड़ी समस्या है ट्रैफिक जाम की। क्या नगर और क्या महानगर, सड़कों पर जाम की स्थिति हर तरफ बनी रहती है। दिनो दिन बढ़ती इस समस्या के लिए यातायात विभाग जिम्मेदार है या फिर हम...यही चिंतन का विषय है। शहर के चौक चौराहों पर ट्रैफिक सिग्नल लगे होने के कारण चालान का भय बना रहता है शायद यही वजह है कि इन स्थानो पर सभी लोग नियमों का पालन करते नजर आते हैं। लेकिन जैसे ही हम इन सिग्नल को पार कर आगे निकल आते हैं वैसे ही यातायात नियमों को धता बताने से गुरेज नहीं करते और बेधड़क सड़कों पर फरार्टे मारने लगते हैं। न ही हमें खुद की चिंता होती है और न ही सामने वाले की।

वहीं अगर कोई नियमों का पालन करते हुए सड़कों पर नजर आता है तो लोग उसी की खिंचाई शुरू कर देते हैं। ट्रैफिक नियमों का पालन कराने की जितनी जिम्मेदारी सरकार की है उससे कहीं ज्यादा खुद की भी है लेकिन यहां लोग एक दूसरे की देखा सीखी करते हुए भेड़चाल में आगे बढ़ निकलते हैं, ऐसे में जब पुलिस चालान काटे या फिर डंडा दिखाए तब यही लोग बहानो का पुलिंदा खोल, हांथ पांव जोड़ते नजर आते हैं इसके बाद भी जब चालान कट जाता है तब कहीं जाकर होष ठिकाने लगते हैं। बहरहाल समझने की जरूरत बस इतनी सी है कि अगर हम ट्रैफिक नियमों का पालन करते हैं तो उससे हमे व्यक्तिगत रूप से कोई नुकसान है क्या..? अगर नहीं है तो फिर इसका पालन क्यों नहीं..?

दुर्घटना होने की संभावना

सड़कों पर बेतरतीब चलते वाहनों की कतार लगी होती है, जरा सी लापरवाही और दुर्घटना को निमंत्रण, आए दिन होने वाले दुर्घटनाओं से हमे सीख लेनी चाहिए कि जब सभी को वाहन चलाना आता ही है तो फिर दुर्घटना होने का कारण क्या है? वाहन चलाते वक्त सतर्कता बहुत जरूरी है। इसके साथ ही अगर सभी वाहन चालक नियमों का पालन करेंगे तो दुर्घटनाएं होनी कम हो जाएंगी।

सड़कों पर बने पार्किंग

एक ऐसा ही मामला मुंगेली, जिले के भारतीय स्टेट बैंक की शाखा का है जहां बैंक के सामने ही मुख्य मार्ग है। बैंक में जाने वाले सभी लोग अपनी गाड़ी बैंक के सामने ही खड़ी करते हैं, बैंक की मुख्य शाखा होने के कारण भीड़ इतनी बढ़ जाती है कि लोगों की गाड़ियों सड़कों पर ही खड़ी मिलती है जिससे आने जाने वाले लोगों को वाहन निकालने में जद्दोजहद करनी पड़ती है। दिन में कई बार जाम की स्थिति निर्मित होती है कभी कभी आवाजाही इस कदर बाधित होती है कि दोनो तरफ के वाहन चालक आपस में ही उलझ कर तू-तू मैं करने लगते हैं। इस समस्या से निजात तभी मिल सकती है जब बैंक को ऐसी जगह में स्थानांतरित किया जाए जहां पार्किंग की पर्याप्त सुविधा हो।

आगे निकलने की जिद भी है एक कारण

एक दूसरे से आगे निकलने, जल्दबाजी में आने जाने का मानो चलन हो पड़ा है किसी को फुर्सत ही नही, इस बात की इसी जल्दबाजी की वजह से नियम टूट रहे हैं और जाम की स्थिति बन रही है। अधिकांष शहरों का यही हाल है कि शहर की सड़के संकरी और उसके उपर से घरों के सामने निकले चबूतरे..।

कविता

मोर हरियर छत्तीसगढ़ के माटी कईसे लाल होगे रे।
मोर हरियर छत्तीसगढ़ के माटी कईसे लाल होगे रे।
जांगर के पेरईया कईसे अलाल होगे रे।।
दारू म नहात हे, पसीना के नहईया।
लहू म सनात हे, माटी के सनईया।।
औजार के धरईया के हाथ म हथियार होगे रे।।
गिनती नइ कर सकव, हजार ले पार होगे रे।
फुकत हे अऊ सुलगावत हे, लुकी के लगईया।।
जेमा जरत अऊ भुंजावत हे, मोर छत्तीसगढ़िया।
कतको के दिया बुता गय, जिनगी म अंधियार होगे रे।।
गिनती नइ कर सकव, हजार ले पार होगे रे।
मोर हरियर छत्तीसगढ़ के माटी कईसे लाल होगे रे।।

-विजेन्द्र (विजय) जायसवाल द्वारा रचित